

डॉ. रॉबर्ट वानॉय , व्यवस्थाविवरण , व्याख्यान 3

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांड्ट

रिडक्शन, कैनोनिकल और रेटोरिकल आलोचना

फॉर्म आलोचना से परे

हम अंतिम कक्षा समय में रूपरेखा में 2, "रियायती इंजीलवाद" को देख रहे थे। मैं आज दोपहर 1 बजे से ठीक पहले बैकअप लेना चाहता हूं और उस हैंडआउट का भी अध्ययन करना चाहता हूं जो मैंने पिछले कक्षा समय में दिया था। मुझे लगता है कि मैं जो करूंगा वह कुछ ऐसा है जो मुझे करना पसंद नहीं है लेकिन समय के हित में, मैं इसे आपके साथ पढ़ूंगा और यहां-वहां कुछ टिप्पणियाँ करूंगा। तो यह उस हैंडआउट से है जो मैंने पिछले कक्षा समय में दिया था। "बियाँड फॉर्म क्रिटिसिज्म" शीर्षक है, और उसके अंतर्गत तीन उप-बिंदु हैं।

“हाल के वर्षों में स्रोत और रूप की आलोचना द्वारा निर्मित बाइबिल पाठ के विखंडन से असंतोष ने पाठ के विश्लेषण के लिए कई नए दृष्टिकोणों के विकास को जन्म दिया है जो इतिहास के बजाय इसके वर्तमान स्वरूप की एकता पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। इसके विकास का।" अब, यदि आप एक मिनट पीछे जाकर सोचें, तो पाठ के विश्लेषण के इस इतिहास में, जिसे हम देख रहे हैं, अब हमारी रुचि दस्तावेजी स्रोतों में सबसे अधिक है। फॉर्म आलोचना के साथ हम उन स्रोतों से आगे बढ़कर उन व्यक्तिगत इकाइयों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं जो स्रोतों में संयुक्त थीं।

“स्रोत और रूप आलोचना दोनों की प्रवृत्ति पाठ को खंडित करने की है, और यदि आप उस साहित्य को देखते हैं जो इतनी चरम सीमा तक चला गया है, तो यह एक बहुत ही कठिन प्रकार का काम बन जाता है जिसके बहुत सारे सकारात्मक परिणाम नहीं आते हैं। इस तरह के काम के लिए पिछले 15 वर्षों में एक प्रतिक्रिया हुई है, और अब रुचि पाठ के अंतिम रूप पर अधिक है। इसका यह कहना आवश्यक नहीं है कि अन्य सभी प्रकार के कार्य *अपने आप में नाजायज हैं*। यह पद्धतियों को नकारने के लिए नहीं है, बल्कि यह कहने के लिए है, ठीक है, आइए अपना सारा ध्यान इन सभी प्रारंभिक कार्यों पर लगाने के

बजाय पाठ के अंतिम रूप को देखें और अंततः अंतिम रूप क्या निकला। इसलिए पिछले लगभग एक दशक में हमने पुनर्लेखन आलोचना, विहित आलोचना की निकट से संबंधित पद्धतियों का उदय देखा है, और एक बेहतर लेबल की कमी के कारण मैं पुराने नियम के पाठ को "साहित्यिक दृष्टिकोण" कहूंगा।

1. प्रतिक्रिया आलोचना

तो सबसे पहले आलोचना आलोचना. हम बस दृष्टिकोण की इन तीन श्रेणियों को देखेंगे और इसमें क्या शामिल है इसका एक छोटा सा विचार प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। पुनर्निमाण आलोचना: इस आंदोलन की जड़ें मार्टिन नोथ के काम में थीं और गेरहार्ड वॉन रैड, लेकिन पाठ के अंतिम रूप पर अपना ध्यान केंद्रित करने में उनसे कहीं आगे बढ़ने की प्रवृत्ति रही है। साहित्यिक आलोचना और रूप आलोचना दोनों ही पाठ को या तो दस्तावेजी पहलुओं या स्वतंत्र साहित्यिक इकाइयों में विभाजित करने की प्रवृत्ति रखती हैं। शुरू से ही, साहित्यिक आलोचकों ने रिडक्टर्स की बात की थी" [हमने इसके बारे में बात की, स्रोतों को संयोजित करना कठिन है] "जो साहित्यिक धाराओं को उसके वर्तमान स्वरूप में संयोजित करने के लिए जिम्मेदार थे। हालाँकि, इन रेडैक्टर्स पर बहुत कम या कोई ध्यान नहीं दिया गया क्योंकि रुचि का ध्यान साहित्यिक दस्तावेजों, या स्वतंत्र कहानी इकाइयों को अलग करने पर था, जिनके साथ इन गुमनाम रेडेक्टर्स ने काम किया था। आपकी ग्रंथ सूची में पृष्ठ दो के नीचे जे. बार्टन की *द ओल्ड टेस्टामेंट मेथड एंड बाइबिलिकल स्टडी अंकित है*। यदि आप इन सभी पद्धतियों का हालिया सर्वेक्षण प्राप्त करना चाहते हैं, तो बार्टन पढ़ने के लिए एक अच्छी किताब है, हालांकि बार्टन आपको उस सर्वेक्षण को इंजील, रूढ़िवादी आधार पर प्रस्तुत नहीं करता है। वह इनमें से अधिकांश पद्धतियों का स्वयं उपयोग करता है और उनमें कुछ भी गलत नहीं देखता है। लेकिन वह पुराने नियम को पढ़ने के पद्धतिगत दृष्टिकोण के इतिहास का पता लगाता है। जैसा कि बार्टन पृष्ठ 45 पर कहते हैं, 'शायद यह महसूस किया गया था कि रेडैक्टर शायद ही बहुत अधिक मौलिकता, या यहां तक कि बुद्धिमत्ता वाले लोग हो सकते हैं, या उन्होंने अपने काम का बेहतर काम किया होगा और

असंगतता के निशान नहीं बताए होंगे और घुमावदार कथात्मक प्रवृत्ति जिसने आधुनिक विद्वता को कच्चे माल का पुनर्निर्माण करने में सक्षम बनाया है जिसके साथ उन्होंने अपने कठिन व्यापार को लागू किया।"

लेकिन जैसा कि फ्रांज रोसेनव्हाइट ने बहुत पहले बताया था, "आर", जो कि रेडेक्टर्स का प्रतीक है, को *रबेनु के लिए खड़ा माना जाना चाहिए*, जो एक हिब्रू शब्द है जिसका अर्थ है "हमारा स्वामी", क्योंकि यह रेडैक्टर से है कि हम शास्त्र प्राप्त करते हैं। और देखिए, यदि आप उनके सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं, तो यह वास्तव में सच है : यह रिडेक्टर है जिसने पवित्रशास्त्र को उस रूप में रखा है जैसा आपके पास है, और यह रिडेक्टर से है कि आप पवित्रशास्त्र प्राप्त करते हैं। वह आपका स्वामी बन जाता है - रिएक्टर - सभी जे लेखक, डी लेखक, पी लेखक, या कुछ भी नहीं।

यह अंतर्दृष्टि गेरहार्ड वॉन रैड के बाइबिल पाठ के सीमांत विकास को उसके वर्तमान स्वरूप में समझाने के प्रयास से आगे बढ़कर इस बात में दिलचस्पी जगाती है कि कैसे रेडैक्टर ने हमें पाठ को उस रूप में समझने का इरादा किया है जिसमें इसे डाला गया है। देखिए, वहां आप अंतिम रूप की ओर बढ़ते हैं। हालाँकि वे अन्य सभी प्रारंभिक प्रकार के कार्यों की वैधता से इनकार नहीं करते हैं, फिर भी वे अंतिम रूप पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यहीं हमें अपना महत्व शेष मिलेगा। बाइबिल अध्ययन के क्षेत्र में यह विकास निश्चित रूप से स्वागत योग्य है क्योंकि यह पहले के समय की साहित्यिक और ऐतिहासिक आलोचना की तुलना में कहीं अधिक सकारात्मक और उपयोगी परिणाम देता है।

बार्टन का कहना है कि रिडक्शन आलोचना के साथ, हम इस बात पर आते हैं कि अन्य साहित्य में प्रशिक्षित छात्र का साहित्यिक आलोचना से क्या मतलब होगा। यह वह देने का प्रयास है जिसे कभी-कभी पाठ का बारीकी से पढ़ना कहा जाता है, यह विश्लेषण करते हुए कि लेखक/संपादक अपने प्रभावों को कैसे प्राप्त करता है। वह अपनी सामग्री को इस प्रकार व्यवस्थित क्यों करता है जैसे वह करता है, और सबसे ऊपर, वह अपने काम की इकाइयों को असंगति देने के लिए किन उपकरणों का उपयोग करता है।

हालाँकि, इस सब में एक विडंबना है। ईजे यंग ने बहुत पहले बताया था कि प्रचुरता

में एकता है जिसे दस्तावेजी परिकल्पना संतोषजनक ढंग से स्पष्ट नहीं करती है। यदि बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों को उस तरीके से एक साथ रखा जाता है जिसकी यह परिकल्पना मांग करती है, तो यह समझना मुश्किल है, यदि असंभव नहीं है, तो परिणाम वह एकता कैसे हो सकती है जिसे पेंटाटेच वास्तव में प्रदर्शित करता है।

एक। बार्टन की रेडेक्शन आलोचना का खतरा बार्टन, पृष्ठ 56, वास्तव में रेडेक्शन आलोचना में खतरे की बात करता है, और यह मुझे बहुत दिलचस्प लगता है, इसकी अपनी नींव को कमजोर करता है। बाइबिल के आलोचकों के जादुई गुण को प्रदर्शित करने में, जिसे "गायब होने वाला रेडैक्टर" कहा जा सकता है, वह कहते हैं, पृष्ठ 57, "ट्रिक बस यह है: जितना अधिक प्रभावशाली आलोचक रेडैक्टर के काम को प्रदर्शित करता है, उतना ही अधिक वह सफल होता है यह दिखाने में कि रेडैक्टर ने सूक्ष्म और नाजुक कलात्मकता से, उसके सामने मौजूद विविध सामग्रियों से एक सरल और सुसंगत पाठ तैयार किया है। वह उन साक्ष्यों को भी उतना ही कम कर देता है जिनके आधार पर सबसे पहले उन स्रोतों का *अस्तित्व स्थापित किया गया था*। इस प्रकार, यदि रिडेक्शन आलोचना बहुत आत्मविश्वास से अपना काम करती है, तो हम इतने सुसंगत लेखन के साथ समाप्त होते हैं कि स्रोतों में कोई विभाजन की आवश्यकता नहीं होती है, और स्रोत और रिडक्टर धुएं के गुबार में एक साथ गायब हो जाते हैं, एक को छोड़कर, स्वतंत्र रूप से निस्संदेह, एक ही लेखक के साथ कथा की रचना की गई।" वह आगे कहते हैं कि, "यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि जिस तरकीब का हमने अभी वर्णन किया है वह गैर-रूढ़िवादी बाइबिल आलोचना के कट्टरपंथी विरोधियों के दिलों को विशेष रूप से प्रिय है। और उनके हाथों में यह दिखाने का एक सुविधाजनक साधन बन सकता है कि आलोचक अपने ही स्वार्थ में लगे हुए हैं।" अब, यह एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसके बारे में यदि आप जानते हैं तो मैं नहीं जानता। इसका मतलब यह है कि उसे अपने ही बम से उड़ा दिया गया है - या हमारी सादृश्यता देने के लिए, जब जादू का बक्सा जिसमें रेडैक्टर था, खोला जाता है, तो न केवल रेडैक्टर चला जाता है, बल्कि मूसा स्वयं उसके स्थान पर आ जाता है। किसी भी प्रकार के उच्च आलोचक के लिए

वास्तव में एक बहुत ही भयावह संभावना।

आप देखिए, चीजों में एक दिलचस्प मोड़ आ गया है। आपके पास यह सब स्रोत आलोचना और रूप आलोचना है, और फिर आपको अंतिम रूप में रुचि और रेडेक्टर्स में रुचि मिलती है जिन्होंने इन सभी को एकीकृत किया है, लेकिन जैसे ही आप रेडैक्टर और चीजों की एकता पर बहुत अधिक जोर देना शुरू करते हैं, आप ' वास्तव में, हम पूरा चक्कर लगा चुके हैं: सिर्फ रिएक्टर को ही लेखक क्यों नहीं बनने दिया जाए? और स्रोतों के बारे में बात भी क्यों करें? इसलिए इन मुद्दों पर साहित्यिक आलोचना में अभी काफी उतार-चढ़ाव चल रहा है। लेकिन संपादन के आलोचक अंतिम पुनर्निर्देशक में रुचि रखते हैं और उन्होंने इन सभी स्रोतों को पाठ के अंतिम रूप में एक प्रकार की एकता में कैसे जोड़ा। ये आलोचक अंतिम रूप में रुचि रखते हैं, हालाँकि संपादन आलोचना के अधिकांश अभ्यासकर्ता पारंपरिक स्रोत और आलोचना को अस्वीकार नहीं करते हैं। ध्यान दें मैं सबसे ज्यादा कहता हूँ।

बी। इवेंजेलिकल और रिडक्शन आलोचना

ऐसे इंजीलवादी हैं जिन्होंने कुछ हद तक आलोचनात्मक आलोचना को स्वीकार कर लिया है जो रूप और स्रोत आलोचना के सभी निष्कर्षों का समर्थन नहीं करते हैं, हालाँकि उनमें से अधिकांश ऐसा करते हैं। यद्यपि संपादन आलोचना के अधिकांश अभ्यासकर्ता पारंपरिक स्रोत आलोचना को अस्वीकार नहीं करते हैं, लेखक के चयन, व्यवस्था और उसकी सामग्री की प्रस्तुति के पीछे के उद्देश्य को समझने के प्रयास के साधन के रूप में इस पद्धति का वैध और उपयोगी तरीके से उपयोग करना संभव है। मुझे लगता है कि उस हद तक आप कह सकते हैं कि इस पद्धति की कुछ वैधता है। उदाहरण के लिए, ल्यूक के समान मैथ्यू के सुसमाचार में कुछ घटनाएँ क्यों दर्ज हैं? उनका वर्णन कुछ खास तरीकों से क्यों किया जाता है? आप जानते हैं, आपके पास अक्सर मैथ्यू के सुसमाचार का यहूदी चरित्र होता है, जबकि ल्यूक का यूनानी चरित्र होता है। क्यों? क्या ये अलग-अलग दर्शक वर्ग हैं?

यह, एक तरह से, आलोचनात्मक आलोचना है क्योंकि आप देखते हैं, आप यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि उन्होंने सामग्री का चयन क्यों किया जैसा उन्होंने किया। उसके पीछे क्या उद्देश्य था? उसने इसे उस तरह से व्यवस्थित क्यों किया जैसे उसने इसे व्यवस्थित किया था? उसके पीछे क्या उद्देश्य है? उन्होंने इसे उस भाषा और शब्दावली के साथ क्यों प्रस्तुत किया जो उन्होंने किया था? उसके पीछे क्या उद्देश्य था? यह सब उस चीज़ में शामिल है जिसे रेडेक्शन आलोचना के रूप में जाना जाता है।

सी। ऐतिहासिक विश्वसनीयता अभी भी कमतर है

हालाँकि, यह समझा जाना चाहिए कि आम तौर पर इस पद्धति के अनुप्रयोग ने पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता में विश्वास बढ़ाने के लिए बहुत कम काम किया है। वास्तव में, ऐतिहासिक विश्वसनीयता तब गंभीर रूप से कमजोर हो जाती है जब यह दावा किया जाता है, जैसा कि वास्तविक व्यवहार में अक्सर होता है, कि रेडेक्टर ने एक धार्मिक बिंदु बनाने के लिए ऐतिहासिक सामग्री को विकृत कर दिया है। अब, अक्सर यही कहा जाएगा। यहां एक रिडेक्टर है जो इतिहास के सटीक तथ्यों को प्रस्तुत करने की तुलना में किसी प्रकार के धार्मिक बिंदु बनाने में अधिक रुचि रखता है। इसलिए, वह किसी प्रकार की पूर्वनिर्धारित धार्मिक योजना में फिट होने के लिए अपनी जानकारी के स्रोतों को मोड़ देगा, या हेरफेर करेगा। आप देखिए, यह काफी अनुमानित है; यह उसका उद्देश्य है और इसे हासिल करने के लिए उसने क्या किया। रेडैक्टियो एन आलोचना के नाम पर बहुत सारा काम चल रहा है जो पाठ के साथ इस तरह का काम करता है।

डी। रिडेक्शन आलोचना का उपयोग करते हुए मैथ्यू पर गुंड्री

मैथ्यू पर रॉबर्ट एच. गुंड्री की टिप्पणी को लेकर विवाद (यह पुराने नियम में है) पर ध्यान दें, *मैथ्यू: ए कमेंट्री ऑन हिज लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट*, ग्रैंड रैपिड्स, एर्डमैन्स, 1982, जिन्होंने इस पद्धति का उपयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि कई घटनाएं इसमें रिले हुई हैं मैथ्यू के सुसमाचार को ऐतिहासिक नहीं माना जाना चाहिए। गुंड्री ने 1983 में

इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के दबाव में इस्तीफा दे दिया, मेरा मानना है, शायद '84। इसके बारे में *क्रिश्चियनिटी टुडे*, फरवरी 3, 1984 में एक लेख है। मैं कह सकता हूँ कि इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के सदस्य, हर साल, जब वे अपनी सदस्यता बकाया का भुगतान करते हैं, एक बयान पर हस्ताक्षर करते हैं जिसमें कहा गया है कि वे पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता में विश्वास करते हैं। मैं नहीं जानता कि इसे ठीक-ठीक कैसे कहा गया है, लेकिन सार रूप में यह यही कहता है। गुंड्री ने उस पर हस्ताक्षर करना जारी रखा। फिर भी, उन्होंने अपनी टिप्पणी में कहा कि उन्हें लगता है कि सामग्रियों की व्यवस्था से धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति हो रही थी जो वास्तव में किसी भी ऐतिहासिक विश्वसनीयता को खतरे में डालती थी।

मैं आपको केवल एक उदाहरण देता हूँ, गुंडरी ने तर्क दिया कि मैथ्यू ने उन कहानियों को स्वतंत्र रूप से बदल दिया है जो ल्यूक द्वारा अधिक ऐतिहासिक रूप से संबंधित हैं। गुंड्री कहते हैं, उदाहरण के लिए, मैथ्यू ने खेतों में चरवाहों को पूर्व के बुद्धिमान लोगों में बदल दिया क्योंकि वह अन्यजातियों के लिए यीशु के मिशन का पूर्वाभास और जोर देना चाहता था। वह विश्वास नहीं करता कि बुद्धिमान लोग यीशु से मिलने आये थे। देखिए, वह वास्तव में जो कह रहा है वह यह है कि वे एक ही चीज़ के बारे में दो कहानियाँ हैं और बुद्धिमान लोग वास्तव में कभी यीशु के पास नहीं गए, वे चरवाहे थे। लेकिन देखिए, मैथ्यू का धार्मिक उद्देश्य चरवाहों के बजाय बुद्धिमान लोगों के साथ बेहतर तरीके से पूरा हुआ, इसलिए मैथ्यू ने इस तरह से अपने स्रोतों में हेरफेर किया। मुझे लगता है कि आप इस तरह की बात से समझ सकते हैं कि क्यों उन पर दबाव डाला गया और उन्हें ईटीएस से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया। [आगे देखें, यदि आप इसमें रुचि रखते हैं, तो लेख "रेडेक्शन आलोचना: क्या यह जोखिम के लायक है?" *क्रिश्चियनिटी टुडे* इंस्टीट्यूट, *क्रिश्चियनिटी टुडे*, अक्टूबर 18, 1985, पत्रिका के इस इंस्टीट्यूट अनुभाग के पृष्ठ 1-10; और फिर केनेथ कांटज़र, "रेडेक्शन क्रिटिसिज्म: हैंडल विद केयर," *क्रिश्चियनिटी टुडे* इंस्टीट्यूट, *क्रिश्चियनिटी टुडे* के उसी अंक में भी। वे दो अच्छे सारांश, लोकप्रिय रूप से लिखे गए लेख हैं जो आपको इस बात का अंदाजा देते हैं कि ईसाई धर्म प्रचारक आलोचना

के इस पूरे क्षेत्र से कैसे जूझ रहे हैं। अधिकांश इंजीलवादी इसे कुछ हद तक वैधता प्रदान करेंगे, लेकिन इसे उन चरम सीमाओं तक नहीं जाने देंगे जो आमतौर पर आलोचनात्मक विद्वानों द्वारा अक्सर और आमतौर पर उपयोग की जाती हैं।]

ई। रोजर्स और मैककिम और इनरैसी

इसका प्रतिशोध आलोचना से कोई *लेना-देना* नहीं है, लेकिन हम पिछले कक्षा घंटे में त्रुटिहीनता की इस पूरी चीज़ पर चर्चा कर रहे थे, और कई अन्य लोगों के साथ-साथ रोजर्स और मैककिम की पुस्तक के बारे में कुछ प्रश्न पूछे गए थे। यह त्रुटिहीनता के इस मुद्दे पर और पवित्रशास्त्र के अध्ययन के लिए साहित्यिक आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग करने पर हाल की पुस्तकों और लेखों की एक सूची है। यदि आप इस क्षेत्र में आगे पढ़ने में रुचि रखते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको यहां कुछ उपयोगी सामग्री मिल सकती है।

शीट के ठीक बीच में रोजर्स और मैककिम की किताब है, और इसके साथ जॉन वुडब्रिज की समीक्षा देखें, " बाइबिल अथॉरिटी: टुवर्ड्स एन इवैल्यूएशन ऑफ रोजर्स एंड मैककिम," *ट्रिनिटी जर्नल*, 1980। मैं कहूंगा कि वुडब्रिज की वह समीक्षा, साथ ही पेज के नीचे सूचीबद्ध वुडब्रिज की किताब और वुडब्रिज के कई लेख, शायद इनमें से कुछ मुद्दों पर सबसे अच्छी चीज हैं जिन्हें आप पढ़ सकते हैं। तारीख तक। ठीक है, संशोधन आलोचना पर कोई प्रश्न?

2. कैनोनिकल क्रिटिसिज्म और बी. चिल्ड्स (येल)

आइये विहित आलोचना की ओर बढ़ते हैं। साहित्यिक विश्लेषण की अपनी पद्धति में कैनोनिकल आलोचना, पुनर्लेखन आलोचना के साथ निकटता से जुड़ी हुई है। हालाँकि, महत्वपूर्ण अंतर यह है कि विहित आलोचना के अभ्यासकर्ता बाइबल को केवल साहित्य के रूप में नहीं, बल्कि धर्मग्रंथ के रूप में मानते हैं। येल डिवाइनिटी स्कूल के ब्रेवार्ड चिल्ड्स विहित आलोचना के जनक और सबसे प्रमुख समर्थक हैं। उन्होंने *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट को स्क्रिपचर के रूप में लिखा है*। वह यह मात्रा है। यह पुराने नियम का परिचय है।

मुझे लगता है कि शीर्षक आपको काम का परिप्रेक्ष्य देता है; धर्मग्रंथ के रूप में पुराना नियम; यह केवल प्राचीन साहित्य के रूप में पुराना नियम नहीं है। स्रोत आलोचकों और रूप आलोचकों द्वारा अक्सर पुराने नियम के साथ इसी तरह व्यवहार किया जाता था। वह इस खंड में कहते हैं कि वह "हिब्रू धर्मग्रंथों को समझने में एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में केनन के महत्व को गंभीरता से लेना चाहते हैं।" वह आगे कहते हैं कि विहित दृष्टिकोण मूल साहित्यिक या सौंदर्यवादी एकता को पुनः प्राप्त करने के बजाय पाठ के धार्मिक आकार की प्रकृति को समझने से संबंधित है।

इसका मतलब यह है कि अध्ययन का ध्यान अंतिम रूप पर है; वह पाठ का विहित रूप है। चिल्ड्स का कहना है कि वह " ऐतिहासिक पुनर्निर्माण " के अलावा पाठ की अखंडता के साथ न्याय करना चाहते हैं। अब, ऐतिहासिक पुनर्निर्माण पीछे जाकर यह पता लगाने का प्रयास है कि पाठ को उसके वर्तमान स्वरूप में लाने में वास्तव में कौन से चरण शामिल थे। वह एक ऐतिहासिक पुनर्निर्माण है। डायक्रोनिस्टिक और सिंक्रोनिस्टिक शब्द ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अभी बहुत अधिक किया जाता है। वह पवित्रशास्त्र के अंतिम रूप में समकालिक पहलू में अधिक रुचि रखते हैं, न कि इसके विकास के पूरे इतिहास में। फिर, वह उस पूरे इतिहास के अध्ययन की वैधता से पूरी तरह इनकार नहीं करेगा, लेकिन उसका ध्यान यहीं नहीं है।

यह, निश्चित रूप से, पिछली शताब्दी में पुराने नियम के अधिकांश विद्वानों के अध्ययन के स्रोत-सूचित आलोचनात्मक फोकस से एक स्वागत योग्य बदलाव है। चिल्ड्स के लेखन से बहुत सारी सकारात्मक बातें सीखी जा सकती हैं। उन्होंने न केवल यह प्रस्तावना लिखी है, उन्होंने निर्गमन और कई अन्य चीजों पर एक टिप्पणी भी लिखी है। कई मामलों में बच्चों को लाभ के साथ पढ़ा जा सकता है, लेकिन आपको उसे बहुत ध्यान से पढ़ना होगा क्योंकि वह पवित्रशास्त्र के बारे में उच्च दृष्टिकोण वाला व्यक्ति नहीं है, भले ही वह पवित्रशास्त्र के विहित आकार और उसके महत्व के बारे में बात करता हो।

फिर भी, चिल्ड्स ऐतिहासिक विषयों के रूप में बाइबिल साहित्य के स्रोत-सूचित आलोचनात्मक विश्लेषण की वैधता को अस्वीकार नहीं करते हैं। वह पृष्ठ 76 पर कहते हैं,

“अंतिम विहित रूप के अधिकार पर जोर देने का उद्देश्य इस महत्वपूर्ण मानदंड को प्रदान करने की अपनी भूमिका का बचाव करना है। पाठ के अंतिम चरण के साथ काम करने का उद्देश्य इसके ऐतिहासिक आयाम को खोना नहीं है, बल्कि प्रक्रिया के संबंध में एक महत्वपूर्ण धार्मिक निर्णय लेना है। गहराई आयाम व्याख्या किए गए पाठ को समझने में सहायता करता है और इससे स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करता है। याह्विस्ट स्रोत को प्रीस्टली और पेंटाटेच से अलग करने के लिए अक्सर दुभाषिया को संयुक्त पाठ को अशुद्धि के साथ सुनने की अनुमति मिलती है।

“लेकिन यह पूर्ण संयुक्त पाठ है जिसने उस परंपरा के आकार पर निर्णय दिया है जो आस्था के समुदाय पर अधिकार कायम रखती है। बेशक, प्राचीन निकट पूर्व के इतिहासकारों के लिए लिखित साक्ष्य के रूप में इसे अलग तरीके से उपयोग करना वैध और पूरी तरह से आवश्यक है, अक्सर उनके पाठ को तिरछा पढ़ा जाता है, लेकिन उनका उद्यम पवित्र ग्रंथ की व्याख्या से एक अलग क्रम है जिसे हम चाह रहे हैं वर्णन करना।”

अब, मुझे लगता है कि वह बयान खुलासा कर रहा है क्योंकि मुझे लगता है कि यहां बच्चे हैं, और मैंने अपना अगला बयान पढ़ा, उनका विहित परिप्रेक्ष्य उतना ही ताज़ा और उपयोगी है, जब पारंपरिक स्रोत और आलोचना के साथ तुलना की जाती है, तो वह इतिहास के बीच द्वंद्व में पड़ने से नहीं बचते हैं। और विश्वास, वह इस ऐतिहासिक पुनर्निर्माण की बात करते हैं, यह एक ऐतिहासिक अनुशासन है, वह एक धार्मिक अनुशासन में रुचि रखते हैं और तुरंत उन दोनों को अलग कर देते हैं। इसलिए वह इतिहास और आस्था के बीच, वैज्ञानिक विश्लेषण और धार्मिक महत्व के बीच द्वंद्व में पड़ने से नहीं बचता, जैसा कि वॉन राड और उससे पहले के अन्य लोगों के साथ हुआ था। वॉन रैड इसे चिल्ड्स की तुलना में आगे बढ़ा सकते हैं, लेकिन यह अभी भी चिल्ड्स के साथ है क्योंकि वह अभी भी विश्वास को स्वीकार करते हैं, अभी भी ऐतिहासिक आलोचना पद्धति को स्वीकार करते हैं, लेकिन आप विहित आलोचना के बारे में बहुत कुछ सुनेंगे, और तेजी से आप बहुत सारे इंजील में देखेंगे चिल्ड्स के उद्धरण लिखना कई चीज़ों में उनकी अंतर्दृष्टि और पाठ के अंतिम रूप पर उनके ध्यान के कारण है, जो कि आखिरकार, वही चीज़ है जिस पर हम ध्यान केंद्रित करते

हैं: पाठ का अंतिम रूप।

3. अलंकारिक आलोचना और रॉबर्ट ऑल्टर

ठीक है, तीसरा, "आलंकारिक आलोचना" का साहित्यिक दृष्टिकोण। आप इसे साहित्यिक आलोचना भी कह सकते हैं, लेकिन तब ये शब्द इतने भ्रमित करने वाले हो जाते हैं क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में साहित्यिक आलोचना का उपयोग अलग-अलग तरीकों से या कई अलग-अलग तरीकों से किया गया है, इसलिए इस साहित्यिक दृष्टिकोण को हम आलंकारिक आलोचना कहेंगे।

बाइबिल साहित्य के विश्लेषण में इस नवीनतम प्रवृत्ति के भीतर विविधता के कारण इस साहित्यिक दृष्टिकोण की सटीक परिभाषा कठिन है। फिर भी, सामान्य जोर में स्पष्ट रूप से पाठ के विश्लेषण में मुख्य रूप से ऐतिहासिक से मुख्य रूप से साहित्यिक रुचि में बदलाव शामिल है। इस परिप्रेक्ष्य से लिखी गई दो सबसे प्रभावशाली पुस्तकें हैं रॉबर्ट ऑल्टर की, *द आर्ट ऑफ बाइबिलिकल नैरेटिव*, 1981 में, और जेम्स कुगेल की, *द आइडिया ऑफ बाइबिलिकल पोएट्री*, भी 1981 में।

चूँकि हमारी रुचि पुराने नियम के ऐतिहासिक लेखन में है, इसलिए मैं ऑल्टर की पुस्तक के महत्व का एक संक्षिप्त सारांश देना चाहूँगा। अब इस किताब का बहुत प्रभाव पड़ा है। रॉबर्ट ऑल्टर की पुस्तक *द आर्ट ऑफ बाइबिलिकल नैरेटिव* में अनुप्रयोग और विधियों के बहुत सारे स्पिन-ऑफ सामने आए हैं। इस पुस्तक में ऑल्टर, जो बर्कले में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में हिब्रू और तुलनात्मक साहित्य के प्रोफेसर हैं, पारंपरिक साहित्यिक आलोचना के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, हालांकि वह उनकी वैधता और मूल्य को अस्वीकार नहीं करते हैं। वह बाइबिल पाठ के एक साहित्यिक विश्लेषण का प्रस्ताव करता है जिसे वह परिभाषित करता है, "भाषा के कलात्मक उपयोग, विचारों, सम्मेलनों, स्वरों, ध्वनि, कल्पना, वाक्यविन्यास, कथात्मक दृष्टिकोण, रचनात्मक इकाइयों के बदलते खेल पर सूक्ष्म भेदभावपूर्ण ध्यान की विविध किस्में और भी बहुत कुछ। दूसरे शब्दों में, यह एक प्रकार का अनुशासित ध्यान है, जिसने आलोचनात्मक दृष्टिकोण के पूरे स्पेक्ट्रम

के माध्यम से प्रकाश डाला है, उदाहरण के लिए, दांते की कविता, शेक्सपियर के नाटक और टॉल्स्टॉय के उपन्यास।

अब यह पारंपरिक अर्थों में साहित्यिक आलोचना है जिसमें इन सभी अलंकारिक उपकरणों आदि को देखने की कोशिश की जाती है जिनका उपयोग लेखक पाठ में करता है। और, निस्संदेह, फिर से, यदि आप बाइबिल सामग्री के साथ उस तरह का काम करते हैं, तो आप अंतिम रूप पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं; आपको इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं है कि यह उस अंतिम रूप तक कैसे पहुंचा, बल्कि आप साहित्य की विशेषताओं को देख रहे हैं जैसा कि यह पवित्रशास्त्र में है। दुर्भाग्य से, अपने दृष्टिकोण को विकसित करने में उन्होंने बाइबिल को दैवीय रहस्योद्घाटन (पृष्ठ 20) मानने की किसी भी धारणा को खारिज कर दिया और पुराने नियम की कथा सामग्री को ऐतिहासिक गद्य कथा के रूप में चित्रित किया। वह कहते हैं, "बाइबल हमें जो प्रदान करती है वह एक असमान सातत्य और वास्तविक ऐतिहासिक विवरण का निरंतर अंतर्संबंध है, विशेष रूप से, लेकिन किसी भी तरह से विशेष रूप से बाद के समय के लिए नहीं, विशुद्ध रूप से पौराणिक लोक इतिहास, पौराणिक विद्या के कभी-कभी रहस्यमय अवशेष, एटियोलॉजिकल कहानियां, राष्ट्र के संस्थापक पिताओं की पितृसत्तात्मक कल्पनाएँ, नायकों के कोट टैल्स, ईश्वर के चमत्कारी पुरुष, राष्ट्रीय इतिहास की प्रगति से जुड़े पूरी तरह से काल्पनिक व्यक्तित्वों के समान आविष्कार और ज्ञात ऐतिहासिक शख्सियतों के काल्पनिक संस्करण। इन सभी आख्यानों को इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया गया है; अर्थात्, ऐसी चीज़ें जो वास्तव में घटित हुईं और जिनका मानव या इज़राइली नियति पर कुछ महत्वपूर्ण परिणाम है," (उद्धरण पृष्ठ 33 का अंत)।

फिर भी, उनका कहना है कि प्राचीन हिब्रू लेखकों ने "ऐतिहासिक घटनाओं में भगवान के उद्देश्यों के अधिनियमन" के बारे में बात करने के लिए कथा का उपयोग करने की मांग की थी। कथा साहित्य ऐसा करने का प्रमुख साधन है। उनका कहना है कि डेविड की कहानियों का एक ऐतिहासिक आधार हो सकता है, लेकिन फिर भी ये कहानियां पूरी तरह से इतिहास लेखन नहीं हैं, बल्कि एक प्रतिभाशाली लेखक द्वारा इतिहास का

कल्पनाशील पुनर्मूल्यांकन है जो अपनी सामग्री को कुछ विषयगत पूर्वाग्रहों के साथ और मनोविज्ञान के अपने उल्लेखनीय अंतर्ज्ञान के अनुसार व्यवस्थित करता है। पात्रों का डेविड कहानियों के लेखक मूल रूप से इज़राइली इतिहास के साथ उसी संबंध में हैं जैसे शेक्सपियर अपने इतिहास के नाटकों में अंग्रेजी इतिहास के साथ हैं। तो वह जो कह रहा है, वह इन दोनों शब्दों के साथ खेलता है: ऐतिहासिक कल्पना और काल्पनिक इतिहास, और वह किस कथा को देख रहा है, उसके आधार पर वह एक या दूसरे, काल्पनिक इतिहास या ऐतिहासिक कल्पना पर जोर देगा। लेकिन वह यह नहीं कहेंगे कि यह सही अर्थों में इतिहास लेखन है। वह विभिन्न दृष्टिकोणों का सुझाव देते हैं, जिनसे बाइबिल कथा की गद्य-कल्पना को पढ़ा और विश्लेषण किया जाना चाहिए। अन्य बातों के अलावा, वह दोहराव की तकनीक, मितव्ययिता की कला (यह एक कहानी में अंतराल की तरह है जिसके बारे में आप आश्चर्यचकित होते हैं; जानकारी का एक निश्चित टुकड़ा जो शामिल नहीं है और आपको कहानी के बारे में सोचने पर मजबूर करता है) के बारे में बात करता है। टाइप दृश्यों का उपयोग। वह अक्सर बाइबिल कथावाचकों द्वारा अपनाए गए सर्वज्ञ रुख की बात करते हैं। वह कहते हैं, “शायद बाइबिल की कहानियों में कथावाचक द्वारा निर्भाई गई भूमिका की सबसे विशिष्ट विशेषता वह तरीका है जिसमें सर्वज्ञता और अस्पष्टता का संयोजन होता है। वह सब कुछ जानने वाला है और पूर्णतया विश्वसनीय भी है।” कथावाचक सर्वज्ञ है।

एक। सर्वज्ञ कथावाचक अब, हम प्रेरणा के दृष्टिकोण से इसके साथ एक निश्चित सहमति रखेंगे, कि लेखक के पास पवित्र आत्मा के निर्देशन से चीजों की अंतर्दृष्टि है, कि वह उन चीजों को जान सकता है जो एक सामान्य इंसान नहीं जानता होगा। वह वास्तव में वह नहीं है जो वह यहां कह रहा है। सर्वज्ञ कथावाचक वह है जो कहानी बनाता है और वह केवल इसलिए सर्वज्ञ है क्योंकि उसने ही कहानी बनाई है। इसलिए वह लोगों के मन में विचार रख सकता है और आपको बता सकता है कि वे क्या हैं क्योंकि वह लेखक है, इसलिए नहीं कि वह किसी वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति के बारे में उस तरह की अंतर्दृष्टि

रखने के लिए प्रेरित हुआ है। और वास्तव में, एक किताब में जिसका मैं बाद में उल्लेख करूंगा, लाइल एस्लिंगर नाम के एक साथी ने *किंगशिप ऑफ गॉड इन क्राइसिस: रीडिंग्स फ्रॉम 1 सैमुअल 1-12*) लिखी है , और वह ऑल्टर की तरह अपनी पूरी किताब में सर्वज्ञ कथावाचक के बारे में बात करता है। 1 सैमुअल में सर्वज्ञ कथावाचक वह है जो न केवल उन कहानियों को बनाता है जो वह कहता है और उन कथानकों को भी बनाता है जो कहानियों और पात्रों में शामिल हैं... वह पात्रों को बनाता है और पात्रों में से एक याहवे है। एस्लिंगर के 1 सैमुअल के विश्लेषण में , सर्वज्ञ कथावाचक यहोवा की रचना करता है, जैसा कि कोई भी लेखक किसी भी मूर्तिपूजक देवता के बारे में बात करेगा और एक कहानी बनाएगा। तो देखिए, जब आप सर्वज्ञ कथावाचक के बारे में बात करते हैं तो आप वास्तव में विचारों की एक पूरी तरह से अलग दुनिया में होते हैं, जबकि हम एक प्रेरित लेखक के बारे में बात करते हैं, भले ही उस प्रेरित लेखक में पवित्र आत्मा के कार्य के कारण सर्वज्ञता का तत्व हो सकता है। . आप इससे भ्रमित नहीं होना चाहेंगे।

सर्वज्ञ कथाकार का गुण कुछ कहानियों में सामने आता है। उदाहरण के लिए, सैमुअल के साथ एस्लिंगर की तरह , यदि आप सैमुअल के पहले अध्याय को देखें, तो हन्ना के माता-पिता के पास कोई बच्चा नहीं था और 1 सैमुअल के अध्याय 1 में श्लोक 5 कहता है कि भगवान ने उसके गर्भ को बंद कर दिया था। अब देखिए, सर्वज्ञ कथावाचक बोल रहा है। प्रभु ने उसकी कोख बन्द कर दी थी। कौन जान सकता है कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर दी है? खैर, सर्वज्ञ कथावाचक के पास उस तरह की अंतर्दृष्टि होती है। बेशक , उन्होंने कहानी बनाई है । यह सच्चा साहित्य है, ऐतिहासिक रूप से नहीं, आवश्यक रूप से सत्य है। एस्लिंगर को इस बात में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है कि न्यायाधीशों से राजाओं तक के संक्रमण के उस दौर में वास्तव में क्या हुआ था, जो कि यह समय ईश्वर के शासन और संकट का समय है। वास्तव में ऐतिहासिक रूप से जो कुछ हुआ उसमें उसकी उतनी दिलचस्पी नहीं है। वह कहानीकार, कथावाचक, जिसने हमें ये सामग्री दी है, के कथानक और कथा तकनीकों में रुचि रखते हैं। वह एक अविश्वसनीय साजिश के साथ आता है जो वास्तव में डेविड और सैमुअल को चालाक और धोखेबाज बनने में मदद करता है जिन्होंने

शाऊल और लोगों दोनों को धोखा दिया और शाऊल को राजा के रूप में स्वीकार करने के लिए कहा। वह इन आख्यानों से इसे कैसे प्राप्त करता है, यह समझाने में बहुत समय लगेगा। लेकिन, आप देखिए, वह इन आख्यानों में वास्तव में जो कहा गया था, और साथ ही जो वास्तव में ऐतिहासिक रूप से हुआ था, उससे बहुत दूर और बहुत दूर हो गया है। ऐतिहासिक रूप से जो कुछ हुआ, उसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। वह इसे साहित्य के एक टुकड़े के रूप में विश्लेषण करने और तकनीकों, उपकरणों, लेखक के दृष्टिकोण आदि को समझने की कोशिश करने में रुचि रखते हैं।

शायद बाइबिल की कहानियों में कथावाचक द्वारा निभाई गई भूमिका की सबसे विशिष्ट विशेषता वह तरीका है जिसमें सर्वज्ञता और अविभाज्यता संयुक्त हैं। वह सब कुछ जानने वाला है और पूरी तरह से विश्वसनीय भी है। एस्लिंगर विषयगत तर्कों के विकास में मुख्य शब्दों के उपयोग पर भी ध्यान देते हैं। जेनेसिस में जोसेफ की कहानी के विश्लेषण के बाद, वे कहते हैं, "कहानी की संपूर्ण कलात्मकता में बाइबिल कथा की अधिकांश प्रमुख तकनीकों का विस्तृत और आविष्कारशील उपयोग शामिल है, जिन पर हमने इस अध्ययन के दौरान विचार किया है: विषयगत का रोजगार मुख्य शब्द, रूपांकनों की पुनरावृत्ति, मुख्य रूप से संवाद के माध्यम से चरित्र, संबंधों और उद्देश्यों की सूक्ष्म परिभाषा, विशेष रूप से संवाद में शोषण और सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ शब्दशः दोहराव, कथावाचक की रणनीतिक और विचारोत्तेजक टिप्पणियों से हटकर कभी-कभार की ओर भेदभावपूर्ण बदलाव एक सर्वज्ञ अवलोकन का दिखावा, काल्पनिक विषय की बहुमुखी प्रकृति को पकड़ने के लिए स्रोतों के एक असेंबल के बिंदुओं का उपयोग।

बी। अन्य अलंकारिक आलोचनाएँ

अब, हाल के वर्षों में बाइबिल कथा सामग्रियों के उस तरह के विश्लेषण में इन लोगों के प्रमुख नामों के साथ बढ़ती खुफिया जानकारी प्राप्त हो रही है: एडेल बर्लिन, *बाइबिल कथा की काव्यात्मक व्याख्या*, 1983। लाइल एस्लिंगर, यह पुस्तक *किंगशिप ऑफ गॉड एंड क्राइसिस*, 1985। जेपी फॉककेलमैन, *नैरेटिव आर्ट एंड पोएट्री इन द बुक्स ऑफ*

सैमुअल, 1981। ईएम गन, दो पुस्तकें, *स्टोरी ऑफ किंग डेविड, शैली और व्याख्या*, 1978, और *फेट ऑफ किंग शाऊल*, 1980। पी. मिशकल *1 सैमुअल लिटरेरी रीडिंग*, 1986। मीर स्टर्नबर्ग, *पोएटिक्स ऑफ बाइबिलिकल नैरेटिव*, 1985, सबसे प्रमुख में से। अब यह सिर्फ एक छोटी सी सूची है, लेकिन आप देख सकते हैं कि किस तरह की सामग्री सामने आ रही है, यह सब पिछले पांच वर्षों के भीतर है। आप कह सकते हैं, बाइबिल की कथा की तरह, अलंकारिक विशेषताओं को देखते हुए यह एक बिल्कुल नया जोर है।

इन अध्ययनों से प्राप्त अंतर्दृष्टि अधिकांश भाग के लिए पुरानी आलोचनात्मक पद्धतियों के कठोर परिणामों से एक स्वागत योग्य बदलाव है। कई अध्ययनों ने मूल रूप से अलग-अलग दस्तावेजों में पाठ के लंबे समय से आयोजित स्रोत महत्वपूर्ण विभाजनों का खंडन करने के लिए कथानक और प्रवचन विश्लेषण का उपयोग किया है। आप देखिए, यह फिर से कथा की एकता पर जोर देता है। आप लेखक की कहानी रचने की तकनीक को देखें।

सी। इवेंजेलिकल और अलंकारिक आलोचना इस पद्धति का उपयोग करने वाले

इवेंजेलिकल आपकी ग्रंथ सूची, लॉंगक्रे और वेन्हम देखते हैं। लॉंगक्रे, पृष्ठ तीन, नीचे का दो तिहाई भाग, कार्य "जोसेफ, दैवीय प्रोविडेंस में एक अध्ययन, पाठ सैद्धांतिक और पाठ भाषाई, उत्पत्ति 37 और 39-48 का विश्लेषण।" अब वह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है, लेकिन कुछ ही महीनों के भीतर इंडियाना में ईसेनब्रौन्स द्वारा जारी किया जाएगा। हालाँकि, लॉंगक्रे ने उस खंड में "किसने जोसेफ को मिस्र में बेच दिया" लिखा था, जिसे हैरिस और मैने डॉ. मैकरे के सम्मान में संपादित किया था, जो कुछ साल पहले, या एक साल पहले, 1986 में प्रकाशित हुआ था, "किसने जोसेफ को मिस्र में बेचा था।" वह वहां यह दिखाने के लिए इस तरह के दृष्टिकोण का उपयोग करता है कि जोसेफ की कहानी का दस्तावेजी स्रोत विश्लेषण वास्तव में एक साथ नहीं बैठता है। आप देखिए, इन स्रोतों में एकता है, जो चीज़ को एक साथ रखती है, और यह वास्तव में इसे दिखाने के लिए इस तरह की विधि का उपयोग कर रही है। वेन्हम, जो अगले पृष्ठ 4 पर है, वहां की तीसरी प्रविष्टि है।

वेन्हम, "द कोहेरेंस ऑफ द प्लड नैरेटिव," 1978, बाढ़ की नूह कहानी के साथ दिखाने के लिए इस तरह के दृष्टिकोण का उपयोग करता है, उत्पत्ति 6-9, जिसे पारंपरिक रूप से जे में विभाजित किया गया है और टुकड़े किए गए हैं, एक एकता है उस प्रकार के स्रोत महत्वपूर्ण विभाजन का खंडन करता है। तो इस तरह की पद्धति का उपयोग करने वाले इवेंजेलिकल के बीच, ये कुछ उदाहरण हैं।

डी। स्रोत आलोचना के विपरीत पाठ की एकता का समर्थन करने वाले गैर-इवेंजेलिकल गैर-इवेंजेलिकल द्वारा स्रोत आलोचना के समान विरोध के लिए, और यह दिलचस्प है, लायल एस्लिंगर की पुस्तक देखें जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था जिसमें, आप जानते हैं, पवित्रशास्त्र का कोई उच्च दृष्टिकोण नहीं है; बिल्कुल ही विप्रीत। फिर भी वह आलोचनात्मक विद्वानों की लगातार आम सहमति के सामने तर्क देते हैं कि सैमुअल 1-12 कई स्रोतों के बजाय एक एकता, एक साहित्यिक एकता है। तो यह दिलचस्प है। आप उसके पूरे दृष्टिकोण पर ध्यान दिए बिना, उसकी कुछ अंतर्दृष्टि का उपयोग कर सकते हैं। तो लाइल एस्लिंगर को देखें जो 1 सैमुअल 1-12 में साहित्यिक एकता के लिए तर्क देते हैं।

कीथ कवाडा और किन को भी देखें, जो आपकी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 3, पृष्ठ के मध्य में है: *इब्राहीम से पहले था: उत्पत्ति की एकता 1-11*; वह यह छोटी सी किताब है। इस तरह के साहित्यिक, अलंकारिक विश्लेषण के द्वारा, वह साहित्यिक विशेषताओं के अनुसार उत्पत्ति 1-11 की एकता के लिए तर्क देते हैं। वह ऐतिहासिकता के लिए बहस नहीं करता। उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। लेकिन वह एकता के लिए तर्क देते हैं।

साहित्यिक दृष्टिकोण के अधिकांश गैर-इंजील अभ्यासियों के शब्द बाइबिल की ऐतिहासिकता को नकारने से बहुत प्रभावित होते हैं। और कभी-कभी, विशेष रूप से फॉकैलमैन के साथ, जो आपकी ग्रंथ सूची के पृष्ठ 3 पर सूचीबद्ध है, कथा तकनीकों की खोज में इतनी अधिकता में पड़ जाते हैं कि ऐसा लगता है कि पाए जाने वाले कई ढांचे की कल्पना को अधिक जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। कथा के अंतर्निहित गुणों की तुलना में विश्लेषक। इसमें से कुछ वास्तव में दिमाग चकरा देने वाला है। फॉकैलमैन की पुस्तक की

एक समीक्षा में कहा गया है, “कुछ खुलासा करने वाले कथा पैटर्न हो सकते हैं, लेकिन उन्हें सामान्य ज्ञान के दलदल से बाहर निकालना लगभग असंभव है। अधिकांश समय मुझे शेक्सपियर के एक आलोचक पर डॉ. जॉनसन की टिप्पणी याद आ रही थी कि, उन्होंने न केवल वह समझाया जिसे किसी भी व्यक्ति ने स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं समझा था, बल्कि इससे भी अधिक, उन्होंने इसे गलत समझाया।

कोई सहमति नहीं

मैं कहूंगा कि आज कोई आम सहमति नहीं है। अलग-अलग लोग अलग-अलग दिशाओं में जा रहे हैं। निश्चित रूप से इस अलंकारिक प्रकार की आलोचना, साहित्यिक दृष्टिकोण, विशेष रूप से कथा सामग्री पर एक नया जोर दिया गया है; यही बड़ी बात है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह वही है जो अभी सबसे अधिक लेखन और रुचि पैदा कर रहा है, लेकिन गैर-इवेंजेलिकल के बीच। इवेंजेलिकल लोगों ने इसके साथ बहुत कुछ नहीं किया है, थोड़ा बहुत किया है, लेकिन गैर-इवेंजेलिकल लोगों के बीच, और इसे आम तौर पर ऐतिहासिकता के पूर्ण खंडन के साथ जोड़ा जाता है।

साथ ही इसमें शामिल कुछ लोगों के बीच स्रोत आलोचनात्मक दृष्टिकोण के प्रति विरोध भी है। इस बात पर बहस चल रही है कि इनमें से कुछ लोग इस सभी स्रोत की आलोचनात्मक सामग्री की वैधता को बनाए रखना चाहते हैं और वैधता से इनकार किए बिना अंतिम रूप के साथ काम करना चाहते हैं। अन्य लोग यह कहना चाहते हैं कि ये सभी स्रोत महत्वपूर्ण हैं, आलोचनात्मक प्रकार की सामग्री वास्तव में इस तक पहुंचने का तरीका नहीं है। बस कोई आम सहमति नहीं है, लेकिन बहुत सारी बहस है।

"संरचनावाद" इस अंतिम साहित्यिक दृष्टिकोण का एक स्पिनऑफ़ होगा जो भाषा की गतिशीलता में बहुत अधिक जटिल और दार्शनिक रूप से शामिल हो जाता है, और मैं संरचनावाद के बारे में वास्तव में इतना नहीं जानता कि इसके बारे में समझदारी से बात कर सकूँ, लेकिन हम इसे इसके अंतर्गत रखेंगे वर्ग।

प्रश्न: क्या अन्य धार्मिक लेखों के साथ भी बाइबल जैसा ही व्यवहार किया जाता है?

उत्तर: मैं ऐसा सोचूंगा लेकिन, आप जानते हैं, मेरे अनुभव बाइबिल से संबंधित लोगों के दायरे में हैं, और मैं पश्चिमी सभ्यता में रहता हूँ जो मूल रूप से यहूदी-ईसाई है। यदि मैं मध्य पूर्व में अरब दुनिया में रहता, या यदि आप सुदूर पूर्व में रहते, तो हम जान सकते थे कि कुरान या कन्फ्यूशियस, या जो कुछ भी चल रहा है, उसका किस प्रकार का साहित्यिक विश्लेषण हो रहा है। मैं नहीं जानता लेकिन मुझे संदेह है कि अन्य कार्यों की तुलना में बाइबल की बहुत अधिक आलोचना की जा रही है।

मुझे नहीं लगता कि आप यह कह सकते हैं कि साहित्य का कोई अन्य टुकड़ा है - यदि आप इसे केवल साहित्य के टुकड़े के रूप में देखते हैं - मुझे नहीं लगता कि साहित्य का कोई अन्य टुकड़ा है जिसका इतना प्रभाव और प्रभाव पड़ा है विश्व संस्कृति जैसा कि बाइबिल में है। अब यदि आप शेक्सपियर के बारे में सोचते हैं, तो उस जैसे किसी व्यक्ति पर एक निश्चित मात्रा में प्रभाव होता है, लेकिन शास्त्रों के प्रभाव के आसपास भी नहीं। बेशक, यह सिर्फ साहित्य नहीं है; और भले ही आप खड़े होकर इसे धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से देखें, यह धार्मिक साहित्य है, इसलिए आपने चर्चा में धर्म के पूरे तीसरे आयाम में प्रवेश किया है। मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि आप बाइबल को केवल साहित्य के रूप में नहीं देख सकते। बाइबल साहित्य है लेकिन यह उससे कहीं अधिक है क्योंकि ईश्वर ने इसके भीतर और इसके माध्यम से बात की है, और यह संवेदनशील कार्य है।

सीएस लुईस, इतिहास लेखन और साहित्यिक समीक्षक इसे याद कर रहे हैं

आइए पुराने नियम के इतिहास लेखन के बारे में थोड़ी और बात करें। मुझे वह शुरू करने दीजिए; हमारे पास कुछ और मिनट हैं। शायद ऐसा करने से पहले मैं इसे आपके साथ साझा कर लूँ, फिर मैं यहीं रुकूँगा। साहित्यिक आलोचना का यह पूरा क्षेत्र - कक्षा में आने से ठीक पहले मैं सीएस लुईस द्वारा लिखे गए एक लेख पर अपना हाथ रखने की कोशिश कर रहा था, जो मुझे लगा कि *ईसाई धर्म में है, आज* शायद 50 के दशक के अंत में, जीवन के विषय के साथ मुझे हमेशा मददगार लगा। सी.एस. लुईस कहते हैं कि बहुत से लोग उनकी पुस्तकों की समीक्षाएँ लिखते थे और इस बारे में कुछ धारणाएँ बनाते थे कि वे

कौन सी परिस्थितियाँ थीं जिनके तहत उन्होंने लिखा था: किस चीज़ ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रभावित किया, आप जानते हैं, उन सभी प्रकार के अनुमान। हो सकता है कि आप इस मुद्दे को संबोधित करने के बारे में जानते हों। वह कहते हैं, “ *पियर्स प्लोमैन* और *फ़ेरी क्वीन* के *आलोचक* उन रचनाओं के इतिहास के बारे में विशाल निर्माण करते हैं। निःसंदेह, हम सभी को ऐसे निर्माणों को अनुमानात्मक मानना चाहिए। और अनुमान के रूप में, आप पूछ सकते हैं, क्या उनमें से कुछ संभावित नहीं हैं? शायद वे हैं। लेकिन समीक्षा किए जाने के अनुभव ने उनकी संभावना के बारे में मेरे अनुमान को कम कर दिया है। क्योंकि, जब आप तथ्यों को जानना शुरू करते हैं, तो आप पाते हैं कि निर्माण अक्सर पूरी तरह से गलत होते हैं। जाहिरा तौर पर उनके सही होने की संभावना कम है, भले ही वे काफी समझदार लाइनों के साथ बने हों। निःसंदेह मैं यह नहीं भूल रहा हूँ कि समीक्षक ने, बिल्कुल सही, मेरी पुस्तक पर उस विद्वान की तुलना में कम अध्ययन समर्पित किया है जो लैंगलैंड या स्पेंसर के प्रति समर्पित है। लेकिन मुझे उम्मीद करनी चाहिए थी कि इसकी भरपाई अन्य फायदों से की जाएगी जो उसके पास हैं और विद्वान के पास नहीं हैं। आखिरकार, वह उसी अवधि में रहता है जिसमें मैं, समान रुचि और राय की धाराओं के अधीन, उसी तरह की शिक्षा से गुज़रा हूँ। वह शायद ही यह जानने में मदद कर सके--समीक्षक इस तरह की चीज़ों में अच्छे हैं और इसमें रुचि लेते हैं--मेरी पीढ़ी, मेरे काल और उन मंडलियों के बारे में जिनमें मैं संभवतः घूमता हूँ। उसके और मेरे बीच आम जान-पहचान हो सकती है। निश्चित रूप से, वह कम से कम मेरे बारे में अनुमान लगाने के लिए उतनी ही अच्छी स्थिति में है जितना कि मृतकों के बारे में अनुमान लगाने के लिए कोई विद्वान। फिर भी वह शायद ही कभी सही अनुमान लगाता है।

इसलिए, मैं इस दृढ़ विश्वास का विरोध नहीं कर सकता कि मृतकों के बारे में इसी तरह के अनुमान प्रशंसनीय लगते हैं, केवल इसलिए क्योंकि मृत लोग उनका खंडन करने के लिए मौजूद नहीं हैं; और असली स्पेंसर और असली लैंगलैंड के साथ पांच मिनट की बातचीत पूरे श्रमसाध्य ताने-बाने को टुकड़े-टुकड़े कर सकती है। और ध्यान दें कि इन सभी अनुमानों में समीक्षक की त्रुटि काफी अनावश्यक रही है। वह कुछ अलग करने के लिए उस

चीज़ की उपेक्षा कर रहा है जिसके लिए उसे भुगतान किया गया है, और शायद वह कर सकता है। उनका काम किताब के बारे में जानकारी देना और उस पर फैसला सुनाना था। इसके इतिहास के बारे में ये अनुमान बिल्कुल निराधार हैं। और इस बिंदु पर, मुझे पूरा यकीन है कि मैं बिना किसी पूर्वाग्रह के लिखता हूँ। मेरी किताबों के बारे में लिखे गए काल्पनिक इतिहास किसी भी तरह से हमेशा आक्रामक नहीं होते। कभी-कभी वे प्रशंसात्मक भी होते हैं। उनके विरुद्ध कुछ भी नहीं है, सिवाय इसके कि वे सत्य नहीं हैं और यदि वे होते तो यह अप्रासंगिक होता।”

अब, मुझे लगता है कि वह जो बात कह रहे हैं, वह यह है कि यदि साहित्यिक आलोचक अपने माध्यम से काल्पनिक रूप से यह नहीं बता सकते कि क्या चल रहा था, जिसने उन्हें उनकी पुस्तक के लेखन में प्रभावित किया और वह कैसे घटित हुआ, यदि वे ऐसा नहीं कर सकते हैं लुईस के समय में, आप इसे किसी ऐसे व्यक्ति के लिए कैसे कर सकते हैं जो 100 साल पहले, या 1,000 साल पहले, 3,000 साल पहले रहता था और इसे इस आश्वासन के साथ कर सकता है कि आप जो कह रहे हैं वह वास्तव में वैसा ही है जैसा चीजें थीं। यह इतना अटकलबाजी बन जाता है। मुझे लगता है कि, आप जानते हैं, इस तरह का 90-95% काम ठीक यही होता है। यह अत्यंत काल्पनिक एवं काल्पनिक है।

प्रतिलेखित: मैट पेट्रिक , ब्रेट ऑलसेन, बेन सेनिंग , एलीसन चैपोनिस , सारा बॉयड
 और संपादक अबीगैल सियरल्स
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया